Dr. Madan Paswan, History,
Assistant Professor.

April 18, 2020

Class : B.A. Part-I (Hons.) Paper-Ist

Topic :- प्राचीन भारतीय इतिहास के साहित्यिक स्रोत.

Continue from 28.03.2020—

उपनिषद् : उपनिषदों से आर्यों के प्राचीनतम दार्शनिक विचारों का ज्ञान प्राप्त होता है। इन्हें वेदान्त भी कहा गया है। इसकी संख्या 108 है, पर इनमें कुछ उपनिषदें ही वैदिक काल के हैं। उपनिषदों की सर्वश्रेष्ठ शिक्षा यह है कि जीवन का उद्देश्य मनुष्य की आत्मा का विश्व की आत्मा से मिलना है। इसको 'पराविद्या' या 'अध्यात्मविद्या' कहा गया है। आगे चलकर यह ईश्वरवादी और अनीश्वरवादी दर्शन का आधार बना। उपनिषदों में ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैतिरीय, श्वेताश्वर, छान्दोग्य, मैत्रायणी, बृहदारण्यक और कौषितकी महत्त्वपूर्ण हैं।

वेदांग तथा सूत्र : वेदों को भली-भाँति समझने के लिए छह वेदांगों की रचना की गई — (1) शिक्षा, (2) ज्योतिष, (3) कल्प, (4) व्याकरण, (5) निरुक्त तथा (6) छन्द। ये शुद्ध उच्चारण तथा यज्ञादि करने में सहायक थे। कल्प का वर्गीकरण तीन उप विभागों में किया गया — (क) श्रौतसूत्र,
(ख) गृह्यसूत्र और
(ग) धर्मसूत्र।

उनके अध्ययन से हम यज्ञीय विधि-विधानों, कर्मकाण्डों तथा राजनीति, विधि एवं व्यवहार से संबंधित अनेक महत्त्वपूर्ण बातें ज्ञात करते हैं। ऋग्वेद से लेकर सूत्रों तक के सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय का काल ईसापूर्व 2000 से 500 तक सामान्य रूप से स्वीकार किया जा सकता है।

महाकाव्य : महाकाव्यों में रामायण और महाभारत सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि ने की। यह भारत का सर्वप्रथम महाकाव्य है। जैकोबी के अनुसार इसमें मूल 5 काण्ड ही हैं और प्रथम तथा सप्तम काण्डों को बाद में जोड़ दिया गया। वर्तमान में इसमें 24 हजार श्लोक हैं। महाभारत महर्षि वेदव्यास की रचना है जिसमें 18 पर्व एवं एक लाख श्लोक हैं। प्रारंभ में इसमें मात्र 20,000 श्लोक थे और इसका नाम जय संहिता था। कालान्तर में इसका नाम शतसंहिता और फिर महाभारत पड़ा।

पुराण : भारतीय ऐतिहासिक कथाओं का सबसे अच्छा क्रमबद्ध विवरण पुराणों में मिलता है। पुराणों के रचयिता लोमहर्ष अथवा उनके पुत्र उग्रश्रवा माने जाते हैं। इनकी संख्या 18 है।

②

18 पुराणों के नाम :-

1. मत्स्य	7. ब्रह्मा	13. नारद
2. मार्कण्डेय	8. वामन	14. पद्म
3. भविष्य	9. वाराह	15. लिंग
4. भागवत	10. विष्णु	16. गरुड़
5. ब्रह्मांड	11. वायु	17. कूर्म
6. ब्रह्मवैवर्त	12. अग्नि	18. स्कन्द .

अधिकांश पुराणों की रचना तीसरी-चौथी शताब्दी ईस्वी में की गई थी। सर्वप्रथम पार्जिटर नामक विद्वान ने इनके ऐतिहासिक महत्व की ओर विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया था। ऐतिहासिक दृष्टि से पुराणों में बताये गये 5 विषयों में 'वंशानुचरित' का विशेष महत्व है। 18 पुराणों में केवल 5 में (मत्स्य, वायु, विष्णु, ब्रह्मान्ड और भागवत) राजाओं की वंशावली पायी जाती है। इनमें सबसे अधिक प्राचीन मत्स्य पुराण है। मौर्य वंश के लिए विष्णु पुराण तथा आन्ध्र (सातवाहन) वंश के लिए मत्स्य पुराण महत्व के हैं। वायु पुराण में गुप्त वंश की साम्राज्य सीमा तथा शासन-पद्धति का वर्णन प्राप्त होता है।

स्मृति ग्रन्थ : स्मृति ग्रन्थ को हम 'धर्मशास्त्र' के नाम से जानते हैं। इनमें मनुस्मृति सबसे प्राचीन तथा प्रामाणिक मानी जाती है। बूलर के अनुसार इसकी रचना ई०पू० दूसरी शताब्दी से लेकर ईसा की दूसरी शताब्दी के मध्य हुई थी। इसमें 2700 श्लोक हैं। मनु के बाद याज्ञवल्क्य, वृहस्पति, नारद और विष्णु ने अपने ग्रंथों की रचना की। विष्णुस्मृति गद्य में है, परन्तु शेष सभी स्मृतियाँ पद्य में हैं। मनुस्मृति से शुंगकालीन भारत की राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक दशा का बोध होता है। नारद स्मृति गुप्त युग की सूचना प्रदान करती है। विश्वरूप, विज्ञानेश्वर, अपरार्क स्मृति-ग्रंथों के प्रमुख टीकाकार हैं।

बौद्ध साहित्य : भारतीय इतिहास के स्रोत के रूप में बौद्ध साहित्य का विशिष्ट महत्व है। सबसे प्राचीन बौद्ध ग्रंथ त्रिपिटक हैं। त्रिपिटक - सुत्त पिटक, विनय पिटक तथा अभिधम्म पिटक नाम से जाने जाते हैं।

Continue ....

— Dr. Madan Paswan, Dept. of History, D.B. College, Jaynagar, Madhubani., 8709493720.
Date 18.04.2020

18 पुराणों के नाम :-

1. मत्स्य	7. ब्रह्मा	13. नारद
2. मार्कण्डेय	8. वामन	14. पद्म
3. भविष्य	9. वाराह	15. लिंग
4. भागवत	10. विष्णु	16. गरुड़
5. ब्रह्मांड	11. वायु	17. कूर्म
6. ब्रह्मवैवर्त	12. अग्नि	18. स्कन्द.

अधिकांश पुराणों की रचना तीसरी-चौथी शताब्दी ईस्वी में की गई थी। सर्वप्रथम पार्जिटर नामक विद्वान ने इनके ऐतिहासिक महत्व की ओर विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया था। ऐतिहासिक दृष्टि से पुराणों में बताये गये 5 विषयों में 'वंशानुचरित' का विशेष महत्व है। 18 पुराणों में केवल 5 में (मत्स्य, वायु, विष्णु, ब्रह्मान्ड और भागवत) राजाओं की वंशावली पायी जाती है। इनमें सबसे अधिक प्राचीन मत्स्य पुराण है। मौर्य वंश के लिए विष्णु पुराण तथा आन्ध्र (सातवाहन) वंश के लिए मत्स्य पुराण महत्व के हैं। वायु पुराण में गुप्त वंश की साम्राज्य सीमा तथा शासन-पद्धति का वर्णन प्राप्त होता है।

स्मृति ग्रन्थ : स्मृति ग्रन्थ को हम 'धर्मशास्त्र' के नाम से जानते हैं। इनमें मनुस्मृति सबसे प्राचीन तथा प्रामाणिक मानी जाती है। बूलर के अनुसार इसकी रचना ई०पू० दूसरी शताब्दी से लेकर ईसा की दूसरी शताब्दी के मध्य हुई थी। इसमें 2700 श्लोक हैं। मनु के बाद याज्ञवल्क्य, वृहस्पति, नारद और विष्णु ने अपने ग्रंथों की रचना की। विष्णु स्मृति गद्य में है, परन्तु शेष सभी स्मृतियाँ पद्य में हैं। मनुस्मृति से शुंगकालीन भारत की राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक दशा का बोध होता है। नारद स्मृति गुप्त युग की सूचना प्रदान करती है। विश्वरूप, विज्ञानेश्वर, अपरार्क स्मृति-ग्रंथों के प्रमुख टीकाकार हैं।

बौद्ध साहित्य : भारतीय इतिहास के स्रोत के रूप में बौद्ध साहित्य का विशिष्ट महत्व है। सबसे प्राचीन बौद्ध ग्रंथ त्रिपिटक हैं। त्रिपिटक - सुत्त पिटक, विनय पिटक तथा अभिधम्म पिटक नाम से जाने जाते हैं।

Continue ....

— Dr. Madan Paswan, Dept. of History, D.B. College, Jaynagar, Madhubani., 8709493720.
Date 18.04.2020 —